# स्नेह-पत्र

प्यारी मीरा,
प्रेम।

प्रभु-प्रेम की धुन हृदय-हृदय में गुंजा देनी है।
मनुष्य का हृदय-मंदिर रिक्त और सूना होकर पड़ा है।
तर्क की राख के अतिरिक्त वहां और कुछ भी नहीं है।
और, हृदय कोई ऐश-ट्रे तो है नहीं कि इस राख से प्रफुल्लित हो उठे।
हृदय को चाहिए फूल—प्रेम के—प्रार्थना के-परमात्मा के।
हृदय को चाहिए संगीत—आत्मा का—अदृश्य का-अमृत्व का।
हृदय को चाहिए सोम—आलोक का—आनंद का—अनुग्रह का।
जा—प्यासों के पास।
गा—और उनके हृदयों पर प्रभु-प्रार्थना की वर्षा कर।
नाच—और उन्हें भी उस नृत्य में निमंत्रित कर ले।
स्वयं में मीरा को पुनर्जन्म दे।
वही है तेरी नियति।
उसी के लिए तुझे मैंने पुकारा है।
डा० को प्रेम।

*— ओशो*
*अंतर्वीणा*

प्यारे ओशो को अनुग्रह व अहोभाव
**मा ध्यान अमोला, मुंबई**

# गिरह हमारा सुन्न में

उत्तरांचल में एक ध्यान-शिविर के दौरान एक संन्यासी मित्र ने पूछा कि जैसे ओशो के पुराने शिष्यों ने अलग-अलग क्षेत्रों में—देहरादून, धर्मशाला में—ओशो ध्यान केंद्र निर्मित किए हैं, आप भी ऐसा कोई अपना केंद्र क्यों नहीं खोलते?

मैंने उत्तर दिया—ये सभी केंद्र ओशो केंद्र हैं, हमारे अपने हैं। मुझे अलग से बनाने की क्या जरूरत है?

उस मित्र ने कहा कि एक दिन अमेरिका में रजनीशपुरम् कम्यून भी आपका अपना था, पुणे में ओशो कम्यून भी आपका अपना था...।

मैंने कहा कि पुणे का ओशो कम्यून आज भी अपना है—यह अलग बात है कि हम वहां जाकर रहते हैं या नहीं। रहना तो अंततः अपने भीतर ही है। और पुणे से बाहर आकर भी हम बहुत मजे से रहते हैं। संन्यास की यही तो कला है—जहां रहो मजे से रहो। या तो हर स्थान अपना है या कोई स्थान अपना नहीं। स्वयं ओशो जहां भी रहे, सदा अतिथि की भांति रहे—अपने ही कम्यूनों में।

रजनीशपुरम् अमेरिका में क्या कोई कम तामझाम था? ***126*** मील में फैला कम्यून, ***93*** रॉल्स रायस गाड़ियां, हवाई जहाज, कम्यून की विशाल चल-अचल संपत्ति, एक दिन ओशो वहां से ऐसे आ गए जैसे उनका कुछ था ही नहीं।

***1971*** में जब मेरी तथा मेरे कुछ और मित्रों की संन्यास में दीक्षा हुई तो ओशो ने हमें एक कीर्तन मंडली बना कर देश के अलग-अलग शहरों में जाने को कहा। हम हर शहर में केवल तीन-पांच दिन तक रुकते और आगे बढ़ जाते। यह सिलसिला ***4-5*** वर्ष तक चला। इस बेघर जीवन-शैली का हमारी शुरुआत में ही एक प्रशिक्षण हो गया।

आज हम देश-विदेश में ध्यान-शिविरों के लिए जाते हैं और हर सप्ताह कहीं और होते हैं। कुछ दिनों के लिए वही स्थान हमारा घर हो जाता है।

भगवान बुद्ध अपने शिष्यों को कहा करते थे : चरैवेति चरैवेति! उनके शिष्य केवल वर्षा ऋतु में एक स्थान पर रुक जाते, अन्यथा सदा चलते रहते। संघ में भी रहते और परिभ्रमण भी चलता रहता। भगवान बुद्ध स्वयं लगातार विहार करते रहे।

श्री गुरुनानक देव जी ने भी अपने प्रेमियों को बहुत विचित्र आशीष दिया—उजड़ जाओ! वे स्वयं भी खूब घूमते रहे। भगवान महावीर ने भी अपने मुनियों को अगृही होने को कहा।

ओशो ने इस देश में तथा अंत में विश्व के ***21*** देशों में लगातार यात्राएं की और हर जगह अतिथि अथवा पर्यटक की भांति रहे। ओशो ने अपने एक संदेश-पत्र में लिखा है — Homelessness is the very nature of consciousness! बेघर होना चेतना का स्वभाव ही है। और सदा स्मरण दिलाया कि संन्यास असुरक्षा में जीना है। सुरक्षा कब्र बन जाती है। असुरक्षा में व्यक्ति जीवंत रहता है।

जिसका अपना कोई एक घर नहीं होता—पूरी दुनिया उसका घर बन जाती है। संन्यासी, चाहे वह किसी धर्म का हो, उसे एक स्थान पर न टिके रहने का सुझाव दिया गया है। उसके लिए प्रवाहमान रहना उसकी साधना में सहयोगी रहा है—विशेषकर बाहर की दुनिया में।

बाहर की दुनिया में कभी कहीं ठहराव नहीं होता—ठहराव अपने भीतर होता है, अपने अंतस-चैतन्य में, अपने हृदय में। बाहर तो सब परिवर्तनशील है, संन्यास उसके साथ लय बना कर चलता है।

इसलिए जब कभी कोई मुझसे तथा मेरे कुछ और संन्यासी मित्रों से पूछता है कि आप कहां रहते हैं तो कहना होता है कि हम कहीं नहीं रहते—अथवा सब जगह रहते हैं।

रहस्य की भाषा में हम अगर अपने आत्यंतिक घर की बात करें तो कहेंगे—गिरह हमारा सुन्न में, अनहद में बिसराम।

बाहर बहुत यात्राएं हो रही हैं—विश्राम कहीं भी नहीं। विश्राम का केवल एक ही सच्चा स्थान है : अनहद में बिसराम।

निरंतर बाहर की यात्राओं पर रहते हैं और साथ ही भीतर की यात्रा भी होती रहती है। जीवन का यह रहस्यमय नियम है—वह दो ध्रुवों (Polarities) के बीच डोलता रहता है। जब बाहर बहुत भटकाव होता है तो भीतर कहीं ठहराव भी होता है। जब भीतर ठहराव हो जाता है तो बाहर कितना भी भटकाव दिखता हो, कोई फर्क नहीं पड़ता। यह हो सकता है—आनंद से हो सकता है।

संन्यास सदा प्रवाहमान है, सदा जीवंत है। हम ***22*** से ***26*** सितंबर को नाचते-गाते मस्ती में झूमते ऐसे ही नव-संन्यास का मनाली में महोत्सव मनाएंगे। मनाली की रमणीय भूमि पर पहले से भी अधिक सुंदर आयोजन होगा। ओशो ने इसी देवभूमि से अपने नव-संन्यास आंदोलन का शुभारंभ किया था। मनाली में, नव-संन्यास की गंगोत्री में इस आनंद-उत्सवमय कारवां में सम्मिलित होने के लिए आप सबको निमंत्रण है।

*— स्वामी चैतन्य कीर्ति*